

## अरस्टू के राज्य संबंधी विचार

'Politus' की पुस्तक में अरस्टू ने राज्य संबंधी सिद्धांतों का वर्णन किया है। उसके राज्य संबंधी विचार इतने प्रामाणिक हैं कि आज भी स्वीकार किये जाते हैं। एलेटो के समान अरस्टू ने भी सोफिस्टों के दस मतों का वर्णन किया कि राज्य एक कृलिम संस्था है। अरस्टू मानता है कि राज्य एक स्वामानिक संस्था है जो सतत विकास का परिवाम है। इस संस्था के उद्देश्य और कार्य नौटिक है, यह सभी संस्थाओं में श्रेष्ठ है। यह मनुष्य के जीवन को श्रेष्ठ बनाने के लिए आटेल्व में आया है और इस उद्देश्य द्वारा आटेल्व में बना हुआ है। अरस्टू के राज्य विषयक विचार को बिनालिखित बिंदुओं के अन्तर्गत विवेचित किया जा सकता है।

**1- राज्य का प्रादुर्भाव :-** अरस्टू का मानना है कि राज्य का निर्माण व्याकृति या व्याकृति समूह ने जानवृक्ष कर या सोच विचार कर किसी काल में नहीं किया। राज्य एक प्राकृतिक संस्था है जिसका जन्म और विकास प्राकृतिक काप से हुआ है। अपनी स्वभाव-जन्य भौतिक, सांस्कृतिक एवं नौटिक आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए स्वामी तथा दास और इली एवं पुरुष एक दूसरे की ओर आकृष्ट होते हैं। इस प्रकार उनके संयोग तथा मेल से परिवार का जन्म होता है जो विकास करके राज्य के काप में परिणत होता है।

**2- राज्य सर्वोच्च समुदाय के रूप में:-** अरस्टू राज्य को समुदायों का समुदाय नहीं आपित्र सर्वोच्च समुदाय मानता है। राज्य सर्वोच्च समुदाय इसालिए है कि वह सबसे ऊपर है और अन्य सभी दस से जुड़े हुए तथा इसपर निर्भइ है। विभिन्न प्रकार के समुदाय मनुष्य की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं लेकिन राज्य वह सभी समुदायों से बड़ी संस्था है जिसके अन्तर्गत मनुष्य के व्याकृतिका सर्वोक्तम विकास होता है। इसके विकास में ही व्याकृतियों तथा सभी संस्थाओं का विकास निहित है। राज्य इसालिए सर्वोच्च समुदाय है।

3- राज्य मनुष्य से पहले : ⇒ अरस्टू का मानना है कि राज्य मनुष्य से पहले है। साधारण तौर पर देखें तो

अरस्टू का यह कथन विचिल लगता है क्योंकि राज्य मनुष्य है उसके विकास क्रम में उपर्युक्त संस्थाओं का ही सर्वोत्तम क्रम है। व्याकृति के अभाव में राज्य की कल्पना वही की जा सकती है। इन तर्कों के आधार पर यह पूछना उठता है कि फिर राज्य व्याकृति से पहले कैसे? वास्तव में इस कथन को ऐतिहासिक दृष्टि से नहीं लिया जाना चाहिए। अरस्टू मनोवैज्ञानिक छवि तर्क की दृष्टि से राज्य को व्याकृति का पूर्ववर्ती मानता है। उसका मानना है कि राज्य छक्क सम्भवता है और व्याकृति उसका अंग है अर्थात् राज्य और व्याकृति का वही संबंध है जो शारीर और उसके अंगों का जिस प्रकार छक्क बीज में छक्क पूरा वृक्ष हुया रहता है तथा विकासोपरांत प्रस्फुटित होता है ठीक वैसी ही रस्थिति व्याकृति और राज्य के साथ है।

4- राज्य आन्तिम छवि पूर्ण संस्था : ⇒ अरस्टू नगर-राज्य को मानव-समाज का सर्वोत्तम समुदाय मानता है।

यह कहता है कि राज्य मानव समुदाय का आन्तिम लक्ष्य है। परिवार तथा ग्राम के बाद मनुष्य के विकास लक्ष्य की आधिकतम स्थिति राज्य में ही होती है। उसकी दृष्टि में सामाजिक विकास का चरम क्रम राज्य में ही संभव है। परिवार से आरंभ होने वाला विकास क्रम नगर-राज्य के रूप में पूर्णता को प्राप्त करता है।

5- राज्य का जीविक स्वरूप : ⇒ अरस्टू मानता है कि राज्य अपने स्वरूप से जीविक है। इसे शब्दों में कहें तो राज्य की प्रकृति छक्क सावधारी जीवधारी के समान है। प्रत्येक सावधारी जीव का रसायनिक तरीके से विकास होता है तथा उसके विभिन्न कार्य उसके विभिन्न अंगों हुआ किये जाते हैं। ये सभी अंग अपने कार्य छवि आस्तित्व के लिए शारीर पर निर्भर होते हैं। यही रस्थिति राज्य के साथ भी है, इसके सभी कार्य इसके अंगों (मनुष्यों) के हुआ किये जाते हैं। जिस तरह विभिन्न अंगों के मिलकर सावधारी जीव का निर्भाव होता है उसी प्रकार नाना उपकार (जैसे अंगों/व्याकृति समुदायों) से मिलकर राज्य की सम्पूर्ण बनता है।